एमएसएमई में एआइ की दस्तक से बढ़ी दक्षता

- टेराकोटा उद्योग में एआइ सेंसर और मशीन लर्निंग तकनीक से रखी जा रही है मिट्टी की गुणवत्ता और तापमान नियंत्रण पर निगरानी
- लकड़ी और फर्नीचर उद्योगों में भी लगाई जा रही एआइ आधारित आटो कटिंग मशीन, कम समय में तैयार करती हैं सटीक आकार

जागरण संवाददाता, वाराणसीः पूर्वी उत्तर प्रदेश के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) की मदद से नई ऊंचाइयां छूने की तैयारी में हैं। वाराणसी, गोरखपुर, आजमगढ़, मीरजापुर और जौनपुर जैसे जिलों में चल रहे हजारों छोटे उद्योग धीरे-धीरे एआइ आधारित तकनीकों को अपनाने लगे हैं। इससे न केवल उत्पादन क्षमता बढ़ी है, बल्कि बाजार विस्तार, गुणवत्ता नियंत्रण और लागत में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

प्रदेश सरकार की वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट योजना के साथ-साथ केंद्र सरकार की डिजिटल एमएसएमई मिशन के तहत इन उद्यमों में तकनीकी हस्तक्षेप की प्रक्रिया शुरू की गई है। अब बनारसी साड़ी उद्योग में डिजाइनिंग के लिए एआइ आधारित साफ्टवेयर इस्तेमाल किए जा रहे हैं, जो ग्राहकों की पसंद, रंग संयोजन और फैशन ट्रेंड का विश्लेषण कर नए डिजाइन तैयार करते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है बल्कि निर्यात के अवसर भी बढ़ रहे हैं।

गोरखपुर के टेराकोटा उद्योग में एआइ सेंसर और मशीन लर्निंग तकनीक से मिट्टी की गुणवत्ता और तापमान नियंत्रण पर निगरानी रखी जा रही है, जिससे उत्पादों की टूट-फूट कम हो गई है। वहीं, मीरजापुर के कारपेट उद्योग में गुणवत्ता जांच और पैटर्न पहचान के लिए एआइ का इस्तेमाल हो रहा है। पहले उत्पाद की गुणवत्ता जांच में घंटों लगते थे, अब एआइ सिस्टम कुछ ही मिनटों में रिपोर्ट दे देता है।

यह सिस्टम पिछले पांच वर्षों के बिक्री डेटा, ग्राहकों की आनलाइन पसंद और मौसम के ट्रेंड का विश्लेषण करके यह बताता है कि किस मौसम में किस रंग और डिजाइन की साड़ी की मांग सबसे अधिक होगी। आजमगढ़ और जौनपुर के लकड़ी और फर्नीचर उद्योगों में भी एआइ आधारित आटो कटिंग मशीनें लगाई जा रही हैं, जो कम समय में सटीक आकार तैयार करती हैं। इससे उत्पादन लागत में 20-25 प्रतिशत की कमी आई है। व्यापारियों का कहना है कि एआइ ने न केवल दक्षता बढ़ाई है, बल्कि उत्पादों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाया है।

एमएसएमई विकास कार्य प्रयागराज के संयुक्त निदेशक एलबीएस यादव का कहना है, 'एआइ से छोटे उद्योगों में नई ऊर्जा आई है। यह केवल तकनीक नहीं, बल्कि एक नई औद्योगिक क्रांति की शुरुआत है जो ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगी।'